[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.....

H

Sr. No. of Question Paper : 4877

Unique Paper Code : 2052202401

Name of the Paper : Anya Gadya Vidhaein

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – DSC**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) विशिष्ट वस्तु या व्यक्ति के प्रति होने पर लोभ वह सात्विक रूप प्राप्त करता है जिसे प्रीति या प्रेम कहते हैं। जहाँ लोभ सामान्य या जाति के प्रति होता है वहाँ वह लोभ ही रहता है। पर जहाँ किसी जाति के एक ही विशेष व्यक्ति के प्रति होता है वहाँ वह 'रुचि' या श्प्रीति' का पद प्राप्त करता है। लोभ सामान्योन्मुख होता है और प्रेम विशेषोन्मुख।

अथवा

दो कृष्णचूडाएं हैं। स्वर्गीय कविवर रबीन्द्रनाथ के हाथ से लगी वृक्षावलि में ये आखिरी हैं। इन्हें अभी शिशु ही कहना चाहिए। फूल तो इनमें कभी आये नहीं, पर वे अभी नादान हैं। भरे। फागुन में इस प्रकार खड़ी हैं मानो श्रीषाद ही हो। नील मसृण पत्तियां और सूच्य शिखन्त। दो-तीन अमरूद हैं, जो सूखे सावन भरे भादों कभी रंग नहीं बदलते इस समय दो-चार श्वेत पुष्प इन पर विराजमान हैं, पर ऐसे फूल माघ में भी थे और जेठ में भी रहेंगे।

(ख) प्रेमचन्दजी को सेवा में उपस्थित होने की इच्छा बहुत दिनों से थी। यद्यपि आठ वर्ष पहले लखनऊ में एक बार उनके दर्शन किये थे, पर उस समय अधिक बातचीत करने का मौका नहीं मिला था। इन आठ वर्षों में कई बार काशी जाना हुआ, पर प्रेमचन्दजी उन दिनों काशी में नहीं थे। इसलिए ऊपर को चिट्ठी मिलते ही मैंने बनारस केन्ट का टिकट कटाया, और इक्का लेकर बेनिया पार्क पहुँच ही गया। प्रेमचन्दजी का मकान खुली हुई जगह में सुन्दर स्थान पर है, और कलकत्ते का कोई भी हिन्दी पत्रकार इस विषय में उनसे ईर्ष्या किये बिना नहीं रह सकता।

अथवा

मेरे संकल्प के विरुद्ध बोलना उसे और अधिक दृढ़ कर देना है इसे भक्तिन जान चुकी है पर जीभ पर उसका वश नहीं। इसीसे अपने प्रश्नों की अजस्र वर्षा में भी मुझे अविचलित देखकर वह मुंह बिचका कर कह उठी, 'कल्पवास की उमिर आई तब उहाँ हुड्ड जाई। का एक दिन सब नेम धरम समापत करें की परतिग्या है यह सब, मैं नियम धर्म के लिए नहीं करती यह भक्तिन को समझाना कठिन है, इससे मैं उसे समझाने का निष्फल प्रयत्न करने को अपेक्षा मोन रहकर उसकी भ्रान्ति को स्वीकृति दे देती हूँ।

(ग) वेद पढ़ने से, वर्णाश्रम धर्म का पालन करने से, कण्ठी पहनने से अथवा तिलक लगाने से कोई वैष्णव जन नहीं होता। यह सब पाप के मूल हो सकते हैं। पाखण्डी भी माला पहन सकता है, तिलक लगा सकता है, वेद पढ़ सकता है, मुख से राम-नाम का जाप कर सकता है। लेकिन पाखण्डी रहते हुए सत्याचरणी नहीं बना जा सकता। पाखण्डी पर-पीड़ा का निवारण नहीं कर सकता और पाखण्ड के रहते हुए चंचल चित्त को निश्चल नहीं रखा जा सकता।

अथवा

वैसे तो मुझे स्टेशन जा कर लोगों को विदा देने का चलन नापसंद है, पर 'इस बार मुझे स्टेशन जाना पड़ा और मित्रों को विदा देनी पड़ी। इसके कई कारण थे। पहला तो यही कि वे

मित्र थे। और, मित्रों के सामने सिद्धांत का प्रश्न उठाना ही बेकार होता है। दूसरे, वे आज निश्चय ही पहले दर्जे में सफर करने वाले थे, जिसके सामने खड़े हो कर रूमाल हिलाना मुझे निहायत दिलचस्प हरकत जान पड़ती है।

2. 'लोभ और प्रीति' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

'वसंत आ गया है' निबंध का सार लिखिए। (15)

3. 'ठकुरी बाबा' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'प्रेमचंद जी के साथ दो दिन' संस्मरण में प्रतिपादित प्रेमचंद जी की चारित्रिक विशेषताओं की समीक्षा कीजिए। (15)

4. 'वैष्णव जन' में निहित उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"'शायद' बीज नाटक में मध्यवर्गीय जीवन को उजागर किया गया है" कथन की पुष्टि सोदाहरण कीजिए। (15)

5. 'अंगद का पांव' में निहित व्यंग्य का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

'ठेले पर हिमालय' की मूल संवेदना बताते हुए लेखक के यात्रा अनुभव पर प्रकाश डालिए। (15)